ज़मीन एक स्लेट का नाम हैं

आत्मकथांश — **श्री एकांत श्रीवास्तव**

नीचे दिए गद्यांश से प्रश्नों का उत्तर ढूँढें:

HSSLiVE.IN

(I) तीस अप्रैल..... की गई।

(1) तीस अप्रैल को किसकी तदर्थ सेवा समाप्त कर दी गई?
लेखक की।

(2) तीस अप्रैल को अपनी तदर्थ सेवा समाप्त करके लेखक ने क्या किया?
बोरिया बिस्तर समेटकर अम्मा सहित बिलासपुर पहुँचा।

(3) सामान लाना इसलिए ज़रूरी था - क्यों?
सामान लाना इसलिए ज़रूरी था क्योंकि **इसमें संदेह हैं कि अगले वर्ष की साक्षात्कार में उन्हें पुनः चुन लिया हो या नहीं।**

(4) गाँव पहुँचकर लेखक ने क्या-क्या किया?
अरसे के बाद गाँव के घर की लिपाई-पुताई की गई।

(5) खंड का संक्षेपण करें।
तदर्थ सेवा समाप्त करके मैं अम्मा सहित बिलासपुर पहुँचा। भाई लिवाने आया था। वहाँ की घर में ताला लगाकर गाँव पहुँचा। **गाँव के घर की लिपाई-पुताई की गई।**

(6) संक्षेपण केलिए शीर्षक लिखें।
अरसे के बाद गाँव में।

(II) बहुत भाग-दौड़ के बाद ..... घर की गई थी।

(1) कितने रुपए केलिए ज़मीन बेचा दिया?
बारह हज़ार प्रति एकड़ की दर से ज़मीन बेचा दिया।

(2) 'बारह हज़ार प्रति एकड़ से' - क्यों लेखक ऐसी कम कीमत में ज़मीन बेचने में विवश पड़ा?
लेखक के बहन की शादी केलिए पैसे की ज़रूरत है। उसके पास पुनः सोचने का समय भी न था। इसलिए कम कीमत में ज़मीन बेचने केलिए विवश पड़ा।

(3) दीदी क्यों बहुत भावुक हो गई थी?
अपनी शादी की तैयारियाँ और पिताजी एवं भाई की ज़मीन बेचने में जो तनाव हैं, उसे देखकर दीदी बहुत भावुक होकर बीच-बीच में रो पड़ती है।

HSSLiVE.IN
Hss Live

HSSLiVE.IN

(4) शादी केलिए क्या-क्या तैयारियाँ शुरु किया?

शादी केलिए मंड़प लगा दिया था, कार्ड़ भी छप गए। मेहमान आने लगे। वधु को हल्दी-तेल चढ़ाना भी शुरु किया।

(5) शादी की तैयारियों के बीच घरवालों के दिल में क्या घर कर गई थी?

घरवालों सब व्यवस्था से संतुष्ट थे, लेकिन मन खाली एवं उदास था। जो उपस्थित था उसकी अनुपस्थिति अभी से दिल में घर कर गई थी।

(6) 'कुछ और कीमत आ सकती थी मगर मज़बूरी का फ़ायदा सभी उठाते हैं।' इस कथन से क्या तात्पर्य हैं?

स्वार्थता भरी इस दुनिया में लोग प्रायः दूसरों की मज़बूरी का फायदा उठाते हैं। यहाँ लड़की की शादी केलिए पैसे की ज़रूरत है। इसलिए ज़मीन बेचने निकले थे। अतः ज़मीन की कीमत कम मिला।

(7) खंड़ का संक्षेपण करें।

बारह हज़ार प्रति एकड़ की दर से ज़मीन केलिए खरीदार मिला। दीदी भावुक होकर बीच-बीच में रो पड़ती थी। शादी की तैयारियाँ शुरु हुई। अब भी हम सभी उदास थे।

(8) संक्षेपण केलिए उचित शीर्षक लिखें।

शादी की तैयारियाँ।

(III) जिस दिन ज़मीन की ..... रक्त की चमक है।

(1) पिताजी ने कब लेखक को अपने साथ खेत चलने को कहा?

अपनी ज़मीन की रजिस्ट्री के एक दिन पहले।

(2) रजिस्ट्री के एक दिन पहले पिताजी ने लेखक से क्या कहा?

रजिस्ट्री के एक दिन पहले पिताजी ने लेखक से अपने साथ खेत चलने को कहा।

(3) **मैं इस अप्रत्याशित प्रस्ताव से चकित हुआ। कौन? अप्रत्याशित प्रस्ताव क्या है?**

लेखक। रजिस्ट्री के एक दिन पहले पिताजी ने लेखक से अपने साथ खेत चलने को कहा। **इस अप्रत्याशित प्रस्ताव से वह चकित हुआ।**

(4) **लेखक क्यों अपने पिताजी के अप्रत्याशित प्रस्ताव से चकित हुआ?**

घर में शादी की तैयारियाँ शुरु हुई। घर में मेहमान भी थे और शादी से संबंधित ज़रूरी काम भी थे। इसलिए अपने पिताजी के अप्रत्याशित प्रस्ताव से वह चकित हुआ।

(5) रजिस्ट्री के पूर्व पिताजी को अपने खेत देखने की इच्छा क्यों हुई?

रजिस्ट्री के बाद ज़मीन दूसरों की बन जाएगा। दूसरों के ज़मीन मे जाना वह पसंद नहीं करते। इसलिए उन्हें रजिस्ट्री के पूर्व ज़मीन देखने की इच्छा प्रकट किया।

(6) पिताजी के साथ खेत जाने केलिए लेखक ने क्यों फ़ुरसत माँगा?

घर में मेहमान थे और विवाह से संबंधित ज़रूरी काम भी थे। इसलिए लेखक ने थोड़ी फ़ुरसत माँगा।

HSSLiVE.IN

(7) लेखक ने फ़ुरसत माँगा तो पिताजी ने क्या कहा?

लेखक ने फ़ुरसत माँगा तो पिताजी ने कहा कि कल की रजिस्ट्री के बाद वह ज़मीन अपनी कहाँ रह जाएगी। दूसरों की ज़मीन में क्या जाना।

(8) पिताजी के किस वाक्य ने लेखक को आहत कर दिया?

'कल की रजिस्ट्री के बाद वह ज़मीन अपनी कहाँ रह जाएगी। दूसरों की ज़मीन में क्या जाना।' यह वाक्य लेखक को आहत कर दिया।

(9) **पिताजी के वाक्य लेखक को आहत कर दिया, क्यों?**

पिताजी के वाक्य में अपनी ज़मीन नष्ट होने की वेदना है। उसकी मन की पीड़ा लेखक समझता है।

(10) खेतों में पहुँचकर पिताजी ने क्या किया?

पिताजी ने सूर्यास्त तक उन बिकनेवाले खेतों में टहलते रहे। वे खामोश थे।

(11) अपने पिताजी के भीतर का हाहाकार समझकर लेखक ने क्या किया?

पिताजी के भीतर का हाहाकार समझकर लेखक ने उसके ओर देखे बिना झुककर मिट्टी को छआ।

(12) अपने मिट्टी को छूने पर लेखक को क्या अहसास हुआ?

अपने मिट्टी को छूने पर लेखक को अहसास हुआ कि यह ज़मीन हमारे बचपन की कविताएँ लिखी हुई स्लेट का नाम है या हमारे रक्त की चमकवाले लाल फूल है।

(13) लेखक को अपनी कभी-कभी ज़मीन एक स्लेट लगता है या कभी-कभी फूल – क्यों?

उस ज़मीन से पिताजी और लेखक का गहरा संबंध है। उन दोनों के जीवन वहाँ से शुरु होते है। उस ज़मीन में लिखकर ही उन्होंने जीवन का पहला पाठ सीखा है। खेलते समय उस ज़मीन पर गिरकर उनके घुटनों से रक्त भी निकला है। इसलिए लेखक को अपनी ज़मीन कभी एक स्लेट लगता है या लाल फूल।

HSSLiVE.IN
Hss Live

(14) खंड का संक्षेपण करें।

रजिस्ट्री के पूर्व पिताजी ने अपनी खेत देखना चाहा। उन्होंने सूर्यास्त तक वहाँ टहलते रहा। उस मिट्टी को छूने पर लेखक को ऐसा लगा कि शायद वह ज़मीन बचपन की कविताएँ लिखी हुई स्लेट होगा या हमारे रक्त की चमक वाले लाल फूल।

(15) संक्षेपण केलिए शीर्षक लिखें।

ज़मीनः स्लेट या लाल फूल

HSSLIVE.IN

(IV) अगले दिन ..... विलाप को।

(1) खेत से आने के बाद पिताजी की अवस्था कैसी थी?

खेत से आने के बाद पिताजी रजिस्ट्री तक खामोश रहे। उन्होंने बस "हूँ - हाँ" करते रहे। मेहमानों से भी औपचारिकता निभाना कठिन हो गया था।

(2) "अगले दिन रजिस्ट्री तक पिताजी खामोश रहे।" क्यों?

बिकनेवाले ज़मीन से पिताजी का बचपन और यौवन गहरे से जुडे थे। इसलिए अपनी ज़मीन की बिदाई के बारे में सोचते ही पिताजी खामोश हुए।

(3) ज़मीन की तुलना किस से की गई है?

हृदय से।

(4) "कौन सुन सकता है उनके निःशब्द विलाप को।" किसके? कौन सा विलाप?

लेखक के पिताजी का विलाप। ज़मीन की विदाई।

(5) ज़मीन की विदाई को क्यों "निःशब्द विदाई" कह गई है?

ज़मीन की विदाई में पिताजी के आँसू भी सूख गई है। क्योंकि वे जानते हैं कि गाँव में इज्ज़त बनाए रखने केलिए धन के साथ ज़मीन के ज़रूरत है।

(6) "मैं ज़मीन नहीं..... अदद आँखें।" कविता केलिए उचित शीर्षक दें।

मिट्टी नहीं....अदद आँखें।

मेरी खोजः

(1) अपने मिट्टी के प्रति लेखक और उनके पिताजी की गहरी आस्था को सूचित करनेवाले वाक्य या वाक्यांश छाँटकर लिखें।

जैसेः जिस दिन ज़मीन की रजिस्ट्री होनी थी, उसके एक दिन पहले पिताजी ने मुझे अ पने साथ खेत चलने को कहा।

- कल रजिस्ट्री के बाद यह ज़मीन अपनी कहाँ रह जाएगी। फिर दूसरों की ज़मीन में क्या जाना।
- मैं ने झुककर मिट्टी को छुआ-चुपचाप-पिताजी को देखे बगैर।
- मैं ज़मीन नहीं बेचता

बेचता हुँ हृदय।

HSSLIVE.IN
Hss Live

HSSLiVE.IN

(2) कवितांश पढ़ें।

'मैं ज़मीन नहीं बेचता ..... मैं बेचता हुँ।'

ज़मीन की तुलना हृदय से क्यों की गई हैं?

लेखक के पिताजी का बचपन से ही इस ज़मीन से गहरा संबंध हैं। उस मिट्टी में खेलकर वे बड़े हुए हैं। खेल के बीच नीचे गिरकर घुटने छिल गई हैं। इसलिए बचपन से ही उस ज़मीन उसके जीवन का भाग हैं।

अनुवर्ती कार्यः

(1) शादी की तैयारियाँ देखकर दीदी का मन संघर्ष से भरा। वह अपना संघर्ष डायरी में लिख रही हैं। वह ड़ायरी लिखें।

सहायक संकेतः

- भाई और माता-पिता का प्यार - परिवार से बिछुडने का दुःख -परिवारवालों केलिए बोझ बनने की नियति - ससुराल के प्रति आशंका।

18/6/2016 बुधवार

शादी का दिन आनेवाले हैं। केवल दो-चार दिन। अब मन संघर्ष से भरा था। वि वाह मंड़प, निमंत्रण आदि प्रारंभिक तैयारियाँ हो चुकी थी। मेहमानों से भरा घर।

बिदाई की इस वेला में मेरे भाई और माता-पिता के गहरे प्यार का अनुभव करती हैं। हाँ, मैं इस घर की प्यारी बिटिया था। अब बिछुड़न का समय आ गई है। आज सबेरे ज़मीन के रजिस्ट्री केलिए पिताजी और भाई गए। पिछले कुछ दिनों से पिताजी बहुत दुःखी था। मेरे विवाह की खर्च केलिए ज़मीन बेचने में विवश हो गया है। क्या आज की ज़माने में लड़कियाँ अपने घर केलिए बड़ा बोझ हैं? हाँ, नहीं तो पिताजी का ज़मीन! वास्तव में लड़की अपने परिवार केलिए बोझ ही है। इस अवस्था से मुक्ति कैसे पा सकें?

दो-चार दिन के बाद मेरी शादी। एक नए घर में....। वहाँ पति के माता-पिता और बहन है। वहाँ का जीवन कैसे होगी? मालुम नहीं। ईश्वर ही रक्षा।

(2) 'बेटी के विदा होने में अभी दो-चार दिन था। मगर ज़मीन की विदाई आज ही हो रही थी। पिताजी के सूखे आँसुओं को कौन देख सकता था। कौन सुन सकता था उनके निःशब्द विलाप को।'

यहाँ दो विदाइयाँ हो रही हैं - बेटी की और ज़मीन की। दोनों विदाइयों पर पिता दुखी हैं। इसके आधार पर पिता और बच्चों के बीच के अनमोल रिश्ते पर एक टिप्पणी लिखें।

श्री एकांत श्रीवास्तव की आत्मकथा की हृदयस्पर्शी अंश है ज़मीन एक स्लेट का नाम है।

यहाँ दो विदाइयों का चित्रण हुआ है - बेटी का और ज़मीन का। बेटी के विदाई केलिए दो-चार दिन शेष है तो ज़मीन की विदाई अब हो गई है। किसी भी हालत में ि

वदाई वेदनाजनक है। यहाँ विवाह की खर्च केलिए ज़मीन बेचने में विवश होता है। इसलिए पिताजी बहुत बेचैन होते हैं।

HSSLIVE.IN

अतिरिक्त प्रश्न और उत्तर:

(1) 'कैश गिनकर ले लिया गया। पिताजी ने रजिस्ट्री के कागज़ात पर हस्ताक्षर कर दिए' - पिताजी के उस दिन की डायरी कल्पना करके लिखें।

- बेटी की शादी - पैसे की कमी - ज़मीन बेचने में विवश होना - कम कीमत में बेचना।

14/4/1985 **बुधवार**

आज का दिन दुःखपूर्ण था। मैं ने क्या लिखूँ? मुझमें शब्द नहीं है। आज ज़मीन का रजिस्ट्री हुआ। कैश गिनकर लिया गया, बारह हज़ार प्रति एकड़ की दर से। रजिस्ट्री के कागज़ार पर हस्ताक्षर भी किया। अभी से उस ज़मीन हमारे नहीं है। उस ज़मीन कैसे अ पनाया? हर एक पैसे इकट्ठा करके सालों पूर्व खरीदा। उस समय बच्चे नहीं पैदा हुए थे। पिछले साल तक वहाँ खेती भी किया था।

बेटी की शादी होनेवाले है। पैसे की कमी है। छह-छह महीने की अवधी में भविष्य निधि से पैसे निकालने के कारण उसमें भी रकम की कमी था। जो शेष था, उसे निकाला। शादी केलिए वस्त्र, आभूषण इत्यादि का प्रबंध बेटा ने किया। फिर भी पैसे की कमी था। बहुत सोचकर अंत में ज़मीन बेचने का निश्चय किया।

कीमत भी बहुत कम मिला। लेकिन हमारे पास पैसे और समय की कमी है। हाँ, मज़बूरी का फायदा उठाना लोगों का आदत बन गई है।

दो दिन बाद प्यारी बेटी की शादी है। ज़रूरी काम अब भी शेष है। सब कहीं बेटे की दृष्टि है। फिर भी एक पिताजी के वजह मुझ में थोड़ी कर्तव्य है। अब बेटी की शादी अच्छी तरह होनी है।

(2) ज़मीन की रजिस्ट्री के एक दिन पहले पिताजी अपने बेटे को खेत चलने को कहा। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखे।

पिताजी : बेटा, तू कहाँ है?
लेखक : पिताजी, मैं यहाँ हुँ।
पिताजी : बेटा, मुझे अपने खेती तक जाना है।
लेखक : अभी!
पिताजी : हाँ, तुम भी मेरे साथ आओ।
लेखक : अब तो घर में मेहमान है। ज़रूरी काम भी शेष है।
पिताजी : तो..
लेखक : पिताजी, एक-दो दिन बाद जाऊँगा। मैं भी आप के साथ आएगा।
पिताजी : एक-दो दिन बाद!
लेखक : हाँ पिताजी, कुछ फुरसत में।
पिताजी : फुरसत में, व्यक्त करो।

HSSLIVE.IN

लेखक : शादी के बाद कभी भी...
पिताजी : अगले दिन ज़मीन के रजिस्ट्री होनेवाली है।
लेखक : मुझे याद है।
पिताजी : उस के बाद दूसरों के ज़मीन में क्या जाना।
लेखक : पिताजी, आप ठीक बोला। चलिए..मैं भी आप के साथ आती हुँ।

HSSLiVE.IN

परीक्षा केंद्रित कुछ और प्रश्न। इनके उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करें:

(1) अपनी तदर्थ सेवा समाप्त करके लेखक अपनी माँ के साथ बिलासपुर पहुँचा। रेलवे स्टेशन में छोटा भाई गुड्डू आया था। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

गुड्डु : भाई, मैं यहाँ हुँ। यात्रा कैसे हैं?
लेखक : ज़रा लंबी रहा।
.....

(2) अपनी शादी की तैयारियाँ देखकर दीदी का मन संघर्ष से भरा। वह अपना संघर्ष भाई से बाँटना चाहा। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

बहन : भाई, मुझे अब शादी नहीं चाहिए।
भाई : दीदी, क्यों? वह तो अच्छा परिवार हैं। इस तरह का संबंध....
.....

(3) अपनी बेटी की शादी की खर्च के बारे में पिताजी और लेखक बातचीत करती हैं। बाद में ज़मीन बेचने के बारे में सोचता है। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

पिताजी : बेटा, शादी केलिए कुछ दिन हैं।
बेटा : हाँ पिताजी, मुझे मालुम हैं।
.....

(4) अपनी बेटी की शादी केलिए उस पिताजी ने ज़मीन बेचना चाहा। अखबार में छपने केलिए एक आकर्षक वार्तालाप तैयार करें।

(5) शादी केलिए ज़मीन बेचना चाहा तो कीमत बहुत कम मिलती है। ज़मीन के कीमत के बारे में पिताजी और खरीदनेवाले के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

पिताजी : चार एकड़ ज़मीन हैं। वर्षों से खेती कर रहे है।
खरीदार : लेकिन आजकल खेती कौन करते हैं?
.....

(6) अपनी शादी केलिए पिताजी ज़मीन बेचने में विवश पडती हैं। इसमें दुःखी बेटी और पिताजी के बीच का संभावित वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

पिताजी : प्यारी बिटिया, तुम क्यों ईतनी दुःखी हैं।
बेटी : मुझे..अब..... यह शादी नहीं.....
.....

HSSLiVE.IN

(7) घर में शादी की तैयारियाँ शुरु हुई। दीदी बहुत भावुक थी और बात-बात में रो पड़ती हैं। दीदी की उस दिन की डायरी कल्पना करके लिखें।

12-7-2015 **शनिवार**

शादी का दिन आनेवाला हैं। केवल दो-चार दिन....

(8) अपनी शादी की तैयारियाँ और ज़मीन बेचने में विवश अपने पिताजी का तनाव दोनों देखकर दीदी का मन संघर्ष से भरा। अपनी मन का संघर्ष वह सहेली को पत्र के रूप में लिखना चाहा। वह पत्र लिखें।

HSSLIVE.IN

छुटा,
15-4-2015

प्रिय जुही,

तुम कैसे हो? घर में माँ-बाप और भाई कैसे हैं? यहाँ शादी की तैयारियाँ शुरु.....

(9) ज़मीन की रजिस्ट्री के पूर्व पिताजी ने लेखक से अपने साथ खेत जाने को कहा। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

पिताजी : बेटा, मुझे अभी खेत तक जाना हैं।
बेटा : अभी! एक-दो दिन बाद जाएगा।
.....

(10) शादी और ज़मीन बेचने के संबंध में लेखक और दीदी के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

दीदी : भाई, सुना है, पिताजी हमारे ज़मीन बेचते हैं।
लेखक : हाँ, कल रजिस्ट्री हैं।
.....

(11) ज़मीन की रजिस्ट्री के बाद पिताजी ने अपना मन का संघर्ष अपनी डायरी में लिखता है। डायरी का वह पन्ना कल्पना करके लिखें।

18-4-2015 **मंगलवार**

आज का दिन मैं कैसे भूलूँ। आज मेरे ज़मीन का.....

(12) बेटी का विवाह के बाद कई वर्ष बीत गए। पिताजी अब अपना आत्मकथा लिखती है, जिसमें वह अपनी बेटी का विवाह और ज़मीन की विदाई के बारे में जिक्र करती है। वह आत्मकथांश तैयार करें।

दो विदाईयाँ

मेरे जीवन की दो विदाईयाँ-बेटी का और मिट्टी का....

HSSLIVE.IN
Hss Live